पौध तैयार नहीं हो पाती है क्योंकि इसके बीज का अंकुरण प्रतिशत बहुत ही कम लगभग 0.8 प्रतिशत पाया गया है।

वृक्षारोपण

कटिंग से प्राप्त पौधों को माह जुलाई–अगस्त में रोपित किया जाता है। थुनेर खाली स्थानों में अधिक वृद्धि नहीं करता है अतः रोपण करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि रोपण क्षेत्र छायादार हो।

समयबद्ध कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य	वर्ष	माह
1	स्वस्थ्य पौधो का चयन	–	कभी भी
2	स्वस्थ्य पौधो से कटिंग प्राप्त करना	प्रथम	जनवरी–फरवरी
3	मिस्ट चैम्बर में कटिंग लगाना	प्रथम	जनवरी–फरवरी
4	रूट ट्रेनरों/थैली में शेड हाउस में प्रत्यारोपण	प्रथम	मई–जून
5	पौधों को खुले स्थान में रखना	प्रथम	सितम्बर
6	रोपण कार्य	द्वितीय/तृतीय	जुलाई–अगस्त

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान
मो0– 9412076135, 05946–234047
2– वन संरक्षक , अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी
मो0 9458192126, 0596–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल
मो0 09458192184, 05942–236270

अनुसंधान पत्रक 6/2011–12

थुनेर
(Taxus baccata)

पौध उत्पादन प्राविधि

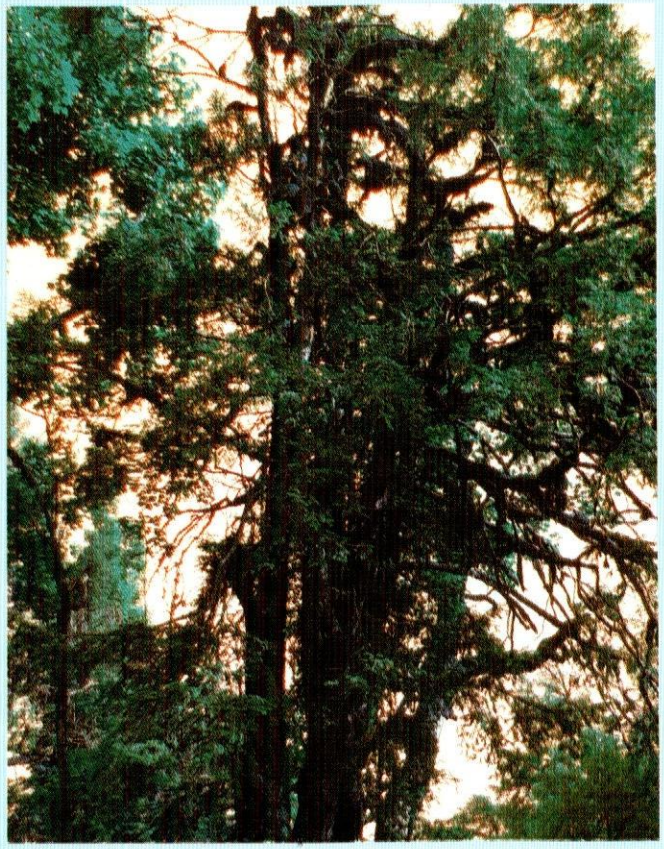

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल
उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

थुनेर
(Taxus baccata)

परिचय

थुनेर महत्वपूर्ण औषधीय गुणों से युक्त एक सदाबहार वृक्ष है जो सामान्यतः 10 से 12 मीटर ऊँचा होता है एवं 1800 मी0 से 3000 मी0 ऊँचाई तक पाया जाता है। इसकी छाल लाल–भूरी होती है। यह वृक्ष मुख्यतः खरसू व फर के उत्तरी ढालों पर पाया जाता है। कुछ स्थानों में यह रई, देवदार तथा तिलोंज के साथ भी पाया जाता है। मुख्य रूप से इसकी पत्तियों का प्रयोग औषधि बनाने में किया जाता है तथा यह वृक्ष लम्बी आयु तक जीवित रहता है। पुष्पण मार्च से मई के मध्य पाया जाता तथा फल सितम्बर से नवम्बर में आते हैं। पत्तियों में टैक्सॉल पाया जाता है जिसमें कैंसर प्रतिरोधी क्षमता होती हैं। पत्तियों एवं छाल का उपयोग हर्बल चाय बनाने में भी किया जाता है।

थनुर का बीज व पत्तियाँ

थनुर की छाल

प्रवर्धन प्राविधि

थुनेर का प्रवर्धन बीज एंव कटिंग द्वारा किया जा सकता है किन्तु सामान्यतः कटिंग द्वारा ही इसकी पौध तैयार की जाती है।

कटिंग द्वारा पौंध तैयार करना

ऐसे स्वस्थ वृक्षों का चयन किया जाता है जिसकी पत्तियों में टैक्सॉल की मात्रा 0.02 प्रतिशत से अधिक हो। ऐसे मध्यम आयु के वृक्षों से कटिंग माह जनवरी–फरवरी में एकत्र करना चाहिए। यदि कटिंग दूर क्षेत्र से एकत्र की जा रही हो तो कॉटन बैग को गीला कर उसमें कटिंग रखकर लाना

आवश्यक है। 25 से 30 सेमी0 लम्बी तथा पेन्सिल से कम गोलाई की कटिंग उपयुक्त होती है। कटिंग को आई0बी0ए0 10000 पी0पी0एम0 पाउडर से उपचारित करने के उपरान्त लगभग 5 मिनट तक खुले में रखें, तत्पश्चात मिस्टचैम्बर के अन्दर बालू में कटिंग को हल्का तिरछा व आठ से दस से0मी0 गहरा रोपित करें। कटिंग रोपित करने से पूर्व बालू को अच्छी तरह पानी से धोना चाहिए व बैवस्टिन से छिड़काव करना चाहिए। कटिंग की रूटिंग पूर्ण होने तक मिस्ट चैम्बर में तापमान 25 से 35 डिग्री सेंटीग्रेट एवं आर्द्रता 80 प्रतिशत से अधिक नियन्त्रित करें। लगभग 3 माह में कटिंग से पौध तैयार हो जाती है तथा इसमें 80 से 84 प्रतिशत तक सफलता प्राप्त होती है। कटिंग में रूटिंग होने के पश्चात कटिंग को

रुट ट्रेनरों (300 सी0सी0) या 6"x4" के थैलो में प्रत्यारोपित कर 1 माह तक शेड हाउस में एवं तत्पश्चात खुले स्थान पर रखा जाता है। मुनस्यारी जैसे स्थानों पर जहॉ हिमपात काफी होता है, पौधो को टिन–शेड के नीचे खुले में रखते हैं। अगले वर्ष जुलाई–अगस्त में पौध वृक्षारोपण हेतु तैयार हो जाती है।

हेज गार्डन की स्थापना

प्रत्येक वर्ष चयनित वृक्षों से कटिंग प्राप्त करना व्यावहारिक नहीं होता। अतः उचित होगा कि थुनेर का हेज गार्डन स्थापित किया जाय जिससे 4–5 वर्षो के उपरान्त कटिंग प्राप्त की जा सकती है। हेज गार्डन में पौधों की स्पेसिंग 1मी0 X 1मी0 रखी जाय।

थनुर हेज गार्डन, मुनस्यारी

बीज द्वारा पौध तैयार करना

सर्वप्रथम मध्य आयु के स्वस्थ्य व रोग मुक्त वृक्ष का चयन किया जाता हैं जिससे उच्च गुणवत्ता के बीजों को एकत्र किया जा सके।

बीज परिपक्व होने के पश्चात् माह सितम्बर–अक्टूबर में एकत्र कर साफ बीज को माह फरवरी व मार्च में नर्सरी में बोया जाता है। बीज से अंकुरण में लगभग 1½ से 2 वर्ष का समय लग जाता है। सामान्यतः पौधालयों में बीज द्वारा